वैज्ञानिक सोच-समझ पुस्तकमाला

नई समझ

शारदा कुमारी

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नई दिल्ली

नई समझ

नई समझ

शारदा कुमारी

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नई दिल्ली ११०००२

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
१७ बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली ११०००२
फोन : ३३१९२८२, ३७२२२०६

वैज्ञानिक सोच-समझ पुस्तकमाला

मूल्य १० रुपये
१९९६

मुद्रक :
प्रभात पब्लिसिटी,
नई दिल्ली ११०००२

दो शब्द

भारत के पिछड़ेपन के कारणों में अंधविश्वास और अफवाहों का काफी बड़ा हिस्सा है। देश में विज्ञान और तकनीकी की उल्लेखनीय उन्नति के बावजूद अभी भी अंधविश्वासों का काफी बोलबाला है विशेषकर हमारे ग्रामीण इलाकों में। अफवाहें काफी तेज़ी से फैलती हैं और देश की प्रगति में बाधा बन जाती हैं।

जबकि हम २१वीं सदी की ओर अग्रसर हो रहे हैं तब ऐसी प्रवृतियां देश को पीछे की ओर धकेल रही हैं जिसे रोकना सभी का काम होना चाहिए, विशेषकर प्रौढ़ शिक्षकों का। बीमारी होने पर अभी भी लोग डाक्टर और वैद्य को न दिखाकर झाड़-फूंक आदि करवाते हैं जिसके कारण बीमार व्यक्ति की मृत्यु तक हो जाती है। विज्ञान में इतनी उन्नति के बावजूद लोगों का अंधविश्वासों पर चलना शर्म की बात है। इसका मुख्य कारण है निरक्षरता, जागरूकता और विज्ञान की सोच और समझ की कमी।

इस कमी को दूर करने के लिए भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ प्रयत्नशील है। इस दिशा में ''वैज्ञानिक सोच और समझ बढ़ाने'' पर एक लेखक कार्यशाला का आयोजन किया गया था। इस लेखक कार्यशाला में वैज्ञानिक सोच और समझ को विकसित करने वाली कुछ पुस्तकों की रचना की गई। इन पुस्तकों में से कुछ पुस्तकें ''वैज्ञानिक सोच-समझ पुस्तकमाला'' के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें नवसाक्षरों एवं आम लोगों को विज्ञान से सम्बन्धित जानकारी सरल, सुबोध

भाषा में देंगी। विज्ञान भी सभी के लिए उतना ही आवश्यक है जितना कि 'सबके लिए स्वास्थ्य' और 'सबके लिए शिक्षा'। आशा है यह पुस्तकें नवसाक्षर साहित्य में एक सार्थक वृद्धि करेंगी।

हम शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के आभारी हैं जिन्होंने लेखक कार्यशाला और इन पुस्तकों के प्रकाशन के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की।

कैलाश चौधरी
महासचिव
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

नई दिल्ली
दिसम्बर, १९९६

नई समझ

झनर खट झनर खट करघा चल रहा था। बिश्ना करघे पर एक साड़ी बिन रहा था। साड़ी सुनहले रंग की थी। साड़ी पर चाँदी की बूटियाँ थीं। ऐसा लगता था मानो चाँद-तारे साड़ी पर उतर आये हों।

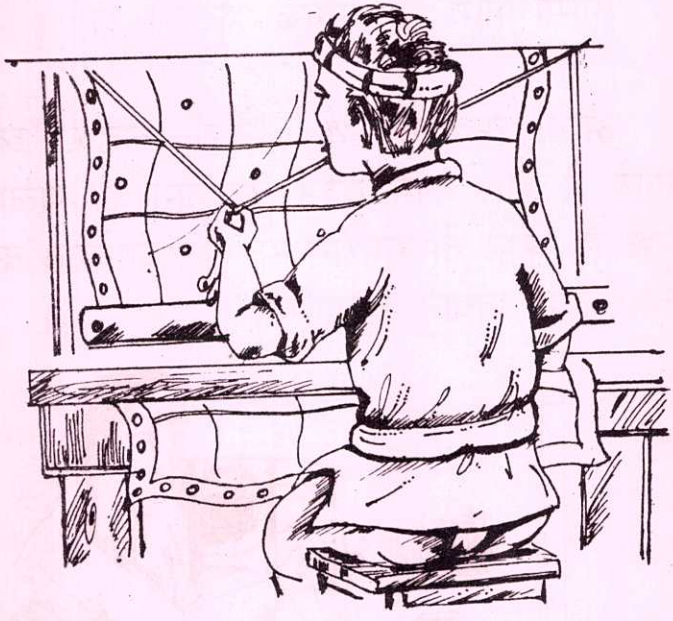

बिश्ना चौबीस साल का लड़का था। बिश्ना ने दसवीं जमात पास की थी। पहले तो कुछ दिनों बिश्ना ने नौकरी की तलाश की। जब नौकरी नहीं मिली तो बिश्ना ने सरकार से लोन लिया। बिश्ना ने अपने घर पर ही एक हथकरघा लगवाया।

बिश्ना बहुत ही मन लगाकर काम करता। अभी पिछले साल ही बिश्ना की शादी हुई थी। आज बिश्ना अपनी दुल्हन के लिए ही साड़ी बुन रहा था।

अचानक घर के भीतर से अम्माँ के डाँटने की आवाज आई।

अम्माँ गौरी पर नाराज हो रही थी।

अम्माँ कह रही थी, "कैसी लड़की ब्याह लाये हैं हम। काम करने का जरा भी सलीका नहीं है। कभी तो गुमसुम सी बैठ जायेगी। कभी चपर-चपर जबान चलाएगी।"

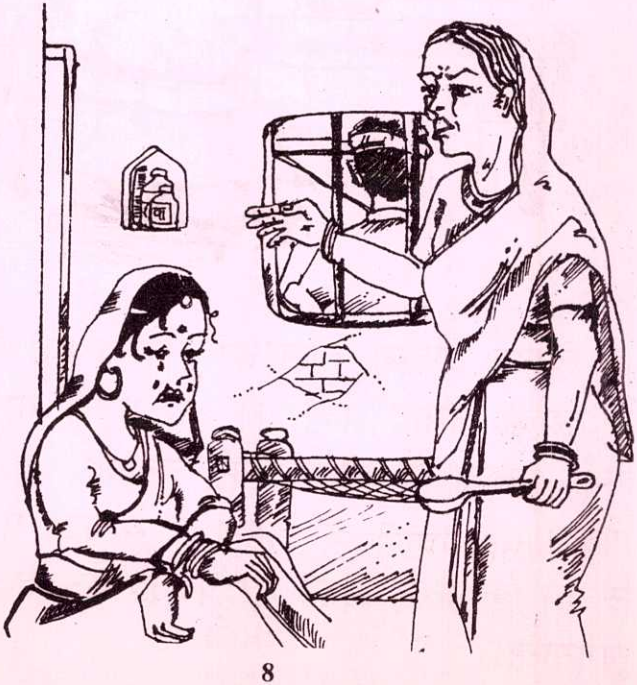

आये दिन अम्माँ गौरी को इस तरह की बातें सुनाती। और सुनाये भी क्यों नहीं गौरी के रंग-ढ़ंग ही अजीब थे। न ढ़ंग से ओढ़ना न पहनना। न नहाने की सुध न खाने पीने का ध्यान।

गौरी अक्सर गुमसुम सी रहती। गौरी का किसी भी काम में मन नहीं लगता। गौरी अक्सर उदास रहती। कभी किसी से बात करती तो बोलती ही जाती। और जब उदास होती तो एकदम गुमसुम सी पड़ी रहती।

अम्माँ सोचती बहू को मायके की याद आ रही है। थोड़े दिन में ठीक हो लेगी। घर के सभी लोग उसका जी बहलाने का यत्न करते। पर गौरी तो उनसे कोसों दूर भागती। गौरी को अकेले रहना अधिक अच्छा लगता।

आखिर ससुराल वाले कब तक सहन करते।

अम्माँ जब तब बड़बड़ाने लगती। अम्माँ कहती, "सोचा था बहू आयेगी, कुछ आराम मिलेगा। यहाँ तो उल्टे बहू की ही चाकरी करनी पड़ रही हैं।"

ननद कहती, "सोचा था भाभी आयेंगी तो खूब घूमें फिरेंगे। यहाँ तो जब देखो रोनी सूरत लटकाये बैठी रहेंगी।"

अब तो पड़ोसिनों ने अम्माँ को सुझाव भी देने शुरू कर दिये। एक कहती, "इसे पीपल वाले बाबा को दिखा दो। देखना एकदम ठीक हो जायेगी।"

अम्माँ बेचारी परेशान तो थी ही। अम्माँ को ये बात एकदम जँच गई। बिश्ना पढ़ा-लिखा था। बिश्ना को ऐसी बातों पर विश्वास न था। पर अम्माँ के सामने कुछ कह नहीं पाया। बिश्ना गौरी के बर्ताव से खुद बहुत दुखी था।

पीपल वाले बाबा ने गौरी का इलाज शुरू किया।

पीपल वाले बाबा सुबह से शाम तक हवन करते। कभी जोर-जोर से मन्त्र पढ़ते। कभी मन ही मन कुछ बुदबुदाते रहते। गौरी बेचारी बाबा के सामने बुत की तरह बैठी रहती। कई बार बाबा गौरी को रस्सी से बाँध देते और झाड़ू से पीटते। जोर से कहते, "ऐ चुड़ैल भाग जा यहाँ से।" घर वाले बेचारे देखते रहते।

आज पीपल वाले बाबा को इलाज करते-करते चौदह दिन हो गये। गौरी का हाल पहले से भी बुरा हो चला था। घर वाले भी बाबा की सेवा टहल करते-करते परेशान हो चले थे। गौरी अम्माँ को बताती, "अम्माँ मुझे कुछ आवाजें सुनाई देती हैं। ऐसा लगता है जैसे कोई मेरा पीछा कर रहा है।"

कई बार गौरी एकदम ठीक रहती। तब वह अम्माँ की बहुत सेवा टहल करती। पूरा घर सलीके से सजाती। पर फिर दो दिन बाद वही हाल हो जाता।

अम्माँ गौरी के बर्ताव से परेशान तो थी पर गौरी से स्नेह भी बहुत करती। वह रात-दिन गौरी की चिन्ता करती। एक रात अम्माँ अचानक नींद से उठ बैठी। बापू को और बिश्ना को जगाया। अम्माँ बोली, "चलो उठो सामान बाँध लो। शहर वाले डाक्टर को गौरी को दिखाना है।"

बापू परेशान, बिश्ना हैरान। बापू बोले अरे भई न बुखार न कोई खांसी न कोई दर्द। फिर ये डाक्टर को दिखाने की बात समझ नहीं आ रही। बाकी घरवालों को भी बात समझ में नहीं आ रही थी। पर अम्माँ बराबर डाक्टर के पास जाने की जिद कर रही थी। अम्माँ बोली कि मैंने सपने में देखा कि एक डाक्टर गौरी को दवा दे रहा है। दवा लेते ही गौरी एकदम भली-चंगी हो गई।

बुआ पास में ही खड़ी थी। बोली, "अरी सपने में वो डाक्टर नहीं कोई सिद्ध बाबा होंगे अम्माँ ने बुआ को झिड़क दिया। अम्माँ बोली, "अरे देखा नहीं, पीपल वाले बाबा बराबर चालीस दिन तक जाप करते रहे। फिर भी कुछ न कर सके। उल्टे गौरी की और बुरी गत बना गये।"

अम्माँ की बात सबको माननी ही पड़ी। भोर होते ही अम्माँ और बिश्ना गौरी को शहर ले गये। सभी बातें खुल कर डाक्टर को बताईं। डाक्टर साहब ने अम्माँ को बहुत शाबाशी दी। उन्होंने कहा, "आप बहुत समझदार हैं। जो इसे हमारे पास ले आईं। वास्तव में गौरी को एक मानसिक रोग है। जैसे ठंड आदि लगने से बुखार हो जाता है। विषाक्त भोजन खाने से बदहजमी हो जाती है, उसी तरह कोई सदमा पहुँचने से, मन पर किसी बात का बुरा असर पड़ने से दिमागी तकलीफ हो जाती है। कुछ लोग सदमा सहन कर लेते हैं। कुछ लोग तकलीफ नहीं झेल पाते। ऐसे लोग सहज नहीं रह पाते। लोग समझते हैं शायद पागल हो गये हैं।"

अम्माँ और बिश्ना ध्यान से डाक्टर की बात सुनते रहे। अम्माँ बोली, "हम सब यही समझते थे कि यह तो निपट पागल है।" इस पर तो किसी भूत का साया है। डाक्टर मुस्कुराये, बोले, " बहुत से लोग यही समझते हैं। जब इन्सान गुमसुम सा रहे, बात-बात पर चिड़चिड़ाये, बहकी-बहकी बात करे तो ऐसा नहीं कि उस पर भूत का साया है। यह तो उसके मन और दिमाग़ की दशा है। ऐसे आदमी को डाक्टर की दवा के साथ-साथ प्यार भी चाहिये। घरवालों को चाहिये कि वह धीरज के साथ उसकी बात सुनें।"

डाक्टर की सलाह के मुताबिक गौरी का इलाज शुरू हुआ। समय पर गौरी को दवाई दी जाती। सभी लोग उससे प्यार और स्नेह रखते।

गौरी को जिम्मेवारी भी सौंपी जाती जिससे उसे लगे कि वह घर की एक जरूरी सदस्य है।

डाक्टर की सलाह पर अमल करने से गौरी

महीने भर में ही बदल गई। अब तो वह बहुत फुर्ती से घर का काम निपटाती है। घर में सभी का आदर मान करती है। अब वह घर की नहीं बल्कि पूरे मुहल्ले की लाडॅली है। सभी से हसँना बोलना, गाना-बजाना खुश रहना उसकी आदत बन गई है।

पड़ोसिन अम्माँ से पूछती, अरी "कौन से बाबा की कृपा है ये?" बापू शरारत से हसँकर कहते "अरे उसी डाक्टर बाबा की कृपा है जो रोज इनके सपने में आता है।" सभी ठहाका मारकर हँसते।